Indian Streams Research Journal
Vol -1 , ISSUE –1, Feb - 2011
ISSN:- 2230-7850 Available online at www.isrj.org

छान्दोग्य उपनिषद में निगूढ अध्ययन –प्रकिया

प्रा. रेवा कुलकर्णी

संस्कृत विभाग द .मै .फ . दयानंद महा सो.

प्रस्तावना :

छान्दोत्र्योपनिषद के सातवें अध्याय में मुनि सनत्कुमार द्वारा देवर्षि नारद जी को परब्रम्हा के तत्त्व का उपदेश दिया गया है। यहाँ ब्रम्हतत्व 'भूमा' अर्यात ' सर्वश्रेष्ठ ' शब्द से प्रतिपादित किया गया है। इस अध्याय की अवतरणिका में आदय शंकराचार्य जी ने ऐसा लिखा है कि जिस तरह व्यक्ति सीढियों पर नीचे से उपर क्रमशः जाता है उसी प्रकार स्थूल से सूक्ष्म तक बुदिधगम्य विषयों को प्रतिपादित कर के बुदिध के परे जो विषय है उनका तत्त्वज्ञान मुनि सनत्कुमार नारद जी को कराते है।

यहाँ उल्लेखनीय यह है कि बुदिधगम्य विषय की प्रतिपादन एक विशिष्ट क्रम में मुनि सनत्कुमार द्वारा किया गया है। विषयों का बुदिधगम्य होना अर्थात उनका ज्ञान विषय होना यह स्पष्ट है। विषयों के क्रम के साथ ज्ञान का भी क्रम निबद्ध है। जो कि क्रमिक ज्ञान की उत्पत्ति की विशिष्ट प्रणालि को दर्शाता है। प्रस्तुत संशोधन भी अध्ययन की प्रकिया में ज्ञान एवं उसके साधनों का विचार करता है। अतः छान्दोग्योपनिषद का यह भाग संशोधन का मुख्य आधार (प्रमाण) बनता है। तात्पर्य यह है कि अध्ययन की वैज्ञानिक प्रकिया हमारे वेदों में मन्त्ररूप से निबदध है जिस का प्रकाश में आना वर्तमान काल की मुख्य आवश्यकता है। यही संशोधन का मुख्य उद्देश्य रहा है।

छं .7.1 शांकर भाष्य अवतरणिका।

➢ ***मुनि सनत्कुमार तथा महर्षि नारद संवाद –***

ब्रम्ह तत्त्व की जिज्ञासा से नारद मुनि सनत्कुमार जी के पास गये थे।'अधीहि भगवान' इति ' ऐसा नारद जी ने ब्रम्ह तत्त्व को जानने वाले सनत्कुमारजी को निवेदन किया। तब सनत्कुमार जी ने 'इतः प्राग् किमधीतम ? 'इस के पहले क्या क्या पढा है 'यह पूछा। नारद जी ने कहा 'मैने सभी वेद सभी विदयाऐं दर्शन इत्यादि समस्त ग्रस्तरांशि को पढ लिया है। इस पर सनत्कुमार जी ने कहा यह सब 'नाम' अर्थात 'शब्द ' है। इससे श्रेष्ठ 'वाक' है जो कि शब्द का कारण है।'वाक' के बिना शब्द अथैबोध नहीं करा सकते। इसलिए वाक् शब्दों सें श्रेष्ठ ,सूक्ष्म और अतीन्द्रिय है।

अगले मन्त्र में सनत्कुमार जी ने मन को वाणी से श्रेष्ठ बताया है। मन 'मनस्यन ' करता है। अर्थात विवक्षा उत्पन्न करता है। मन वाणी से श्रेष्ठ और सूक्ष्म है।मन में ही 'कार्य करना है' 'अध्ययन करना है ' इत्यादि इच्छाएँ उत्पन्न होती है। इच्छा ही प्रवृत्ति का कारण है।

इसी क्रम में संकल्प को मन से भी श्रेष्ठ बताया गया है। संकल्प अन्तःकरण की एक वृत्ति है। जिस में कर्तव्य एवं अकर्तव्य का निश्चय किया जाता है। जब तक संकल्प नही होता तब तक चिकीर्षा नही होती इसिलिये संकल्प मन से श्रेष्ठ है।

संकल्प से चित्त को श्रेष्ठ बताया गया है। 'चित्त ' विवेक शक्ति को कहा जाता है। चित्त में प्राप्त काल के अनुरूप बोध कराना अतीत एवं भविष्य विषयक परिणामों को तोलने एवं अनुकुल विकल्प के चयन का सामर्थ्य होता है। प्रयोजन की अनुकूलता एवं प्रतिकूलता का निर्धारण युक्तियों के आधार पर करना चित्त का प्रमुख कार्य है । साथ ही चित्त वस्तुओं के तत्त्व का निर्धारण भी करता है। इस प्रकिया को संपादित करने के लिये चित्त प्रत्यक्षादि प्रमाणों का उपयोग करता है। प्रायः सभी दर्शनों ने चित्त के सामर्थ्य को विकसित एवं सटीक करने हेतु प्रमाण विचार का ग्रथन अनिवार्य रूप से किया है।

चित्त से भी ध्यान को श्रेष्ठ बताया गया है। ध्यान अर्थात एकाग्रता । एकाग्रता सम्पूर्ण ज्ञान प्रक्रिया में अत्यावश्यक होती है यह सर्वसामान्य तत्य्य है।

ध्यान से भी 'विज्ञान' श्रेष्ठ बताया गया है। विज्ञान अर्थात प्रमाणजन्य ज्ञान। यथार्थ ज्ञान इसलिये मन आदि तत्त्वों से श्रेष्ठ है क्यों कि वे सभी तत्त्व सविषयक है और विज्ञान ही उन तक विषयों को पहुँचता है। यदि विषयों का ज्ञान ही ना होगा तो ना ध्यान होगा ना विवेक होगा ना संकल्प ना चिकीर्षा और भी पदार्थों की चर्चा है परन्तु संशोधन के लिये विज्ञान तक का भाग महत्त्वपूर्ण है। विज्ञान प्रमाणों से होता है। संशोधन के प्रत्यक्ष कार्य में प्रमाणों का (प्रत्यक्ष आदि) अभ्यास छात्रों को कराया गया था। जिस का उद्देश्य उनकी अध्ययन की आंतरिक प्रक्रिया को सुधारना था। अध्ययन में भी विषय को ग्रहण करना ,चिंतन करना ,धारण एवं प्रस्तुत करना यही प्रक्रियाएँ होती है। जिसका क्रम उपरोक्त मन्त्रों के अनुसार ही होता है। उपरोक्त प्रक्रिया को आधार मान कर प्रमाणों का और चित्त आदि अन्तःकरण के सामर्थ्यों का सामंजस्य स्थापित करना जिससे की छात्रों का अध्ययन सुधारे इस कार्य में यह संशोधन सफल सिद्ध हुआ।

संदर्भ ग्रंथ–

1) छादोंग्य उपनिषद्
2) न्याय दर्शन
3) सांख्य कारिका